SISE & CTE, JABALPUR

ONLINE CLASS SESSION

- Date : 20/04/2020
- Coordinator : Smt. Preeti Shrivastava
- Class : M.Ed. 2nd Sem
- Time : 12 to 12:40 PM
- Subject : Psychology
- Topic : Proprium & Dynamics of personality by Allport
- TLM Used : Slides & other study materials
- Attendance : 100 %

प्रोप्रियम (Proprium)
&
कार्यात्मक स्वायत्तता
(Functional Autonomy)

प्रोप्रियम (Proprium)

- प्रोप्रियम मानव प्रकृति के धनात्मक, सर्जनात्मक, वर्धन-उन्मुखी तथा गतिशीलता के गुणों को दर्शाता है।
- आलपोर्ट ने प्रोप्रियम के स्वरूप एवं विकास का वर्णन सात अवस्थाओं के रूप में किया है। ये सातों अवस्थाएं शैशवावस्था से किशोरावस्था तक की होती हैं।

www

प्रोप्रियम (Proprium)

- किशोरावस्था में आकर प्रोप्रियम का विकास पूर्ण हो जाता है।
- अब हम इन सातों अवस्थाओं के बारे में समझेंगे-

1. **शारीरिक आत्मन (Bodily Self):** इस अवस्था में बालक अपने अस्तित्व से अवगत होता है।

www

प्रोप्रियम (Proprium)

2. **आत्म पहचान (Self-Identity):** इस अवस्था में बच्चे यह अनुभव करते हैं कि उनके भीतर कई तरह के परिवर्तन होने के बावजूद उनकी एक अलग पहचान है।
3. **आत्म सम्मान (Self-Esteem):** बच्चे अपने उपलब्धियों पर गर्व करने लगते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

4.आत्म विस्तार (Self-Extension): बच्चे उन वस्तुओं तथा लोगों को पहचानने लगते हैं जो उनके मतलब का होता है।

प्रोप्रियम (Proprium)

5.आत्म प्रतिमा (Self-Image): बच्चे अपने तथा अपने व्यवहार के बारे में एक वास्तविक एवं आदर्श प्रतिमा विकसित कर लेते हैं और अपने माता-पिता की प्रत्याशाओं को संतुष्ट कर पाने में सफल होते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

6.युक्तिसंगत समायोजन के रूप में आत्मन (Self as Rational Coper): इस अवस्था में बच्चे दिन-प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में तर्क-वितर्क एवं विवेक का प्रयोग करना सीख लेते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

7. उपयुक्त प्रयास (Propriate Striving): यह अवस्था किशोरावस्था में विकसित होती है तथा इसमें किशोर दीर्घ-कालीन योजना तथा लक्ष्य का निर्माण करना प्रारम्भ कर देते हैं।

गुणधर्म या आत्मतत्व
(Proprium)

लैटिन भाषा का शब्द है Propius, जिसका अर्थ होता है अपना (own)

आलपोर्ट के अनुसार,

- व्यक्तित्व असंबंधित शीलगुणों का मात्र एक बंडल नहीं होता है। बल्कि इसमें शीलगुणों की एक संगति, एकता एवं समन्वय पाया जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व में कुछ ऐसे नियम होते हैं जो शीलगुणों, मूल्यों, अभिप्रेरकों को संगठित करता है। इसको आलपोर्ट ने 'प्रोपियम' कहा है।
- आलपोर्ट के लिए प्रोपियम - आत्मन (self) या अंह(Ego) के तुल्य है परन्तु उन्होंने इन दोनों शब्दों का प्रयोग नहीं किया है।
- आलपोर्ट के अनुसार, प्रोपियम व्यक्तित्व के उन पहलुओं से संबंधित होता है जो व्यक्तित्व में आन्तरिक एकता, संगति और समन्वय स्थापित करते हैं।
- आलपोर्ट के अनुसार, अंह (Ego) के जो कार्य हैं, वही कार्य व्यक्तित्व के प्रोपियम के हैं।
- आत्म ~~गौरव~~ प्रतिमा (Self imege), आत्म तादात्म्य (Self Identification आत्म विस्तार (Self extension), आत्म गौरव (Self pride), तार्किक चिन्तन, शरीर बोध, संज्ञानात्मक शैली (Cognitive style) और ज्ञान की प्रक्रिया सभी प्रोपियम से सम्बन्धित है।

- आलपोर्ट के अनुसार, Proprium के स्वरूप व विकास की सात अवस्थाएँ होती हैं, ये अवस्थाएँ शैशवावस्था से किशोरावस्था तक की होती हैं। किशोरावस्था में proprium पूर्ण विकसित हो जाता है।

प्रथम 3 वर्ष की आयु में विकास

→ (1) शारीरिक आत्मन (Bodily Self)
→ (2) आत्म पहचान (Self Identity)
→ (3) आत्म सम्मान (Self Esteem)

4 से 6 वर्ष की आयु में विकास

→ (4) आत्म विस्तार (Self extention)
→ (5) आत्म प्रतिमा (Self image)

6 से 12 वर्ष की आयु में विकास

→ (6) युक्तिसंगत समायोजन के रूप में आत्मन (Self as a retional coper)

किशोरावस्था में विकास

→ (7) उपयुक्त प्रयास (Propriate striving)

8 slides के बाद देखें ↓

(2) व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of Personality)

(1) **कार्यात्मक स्वायत्तता** (Functional Autonomy)

(2) चेतन तथा अचेतन अभिप्रेरणाएँ

> परिपक्व मनुष्य पूर्णरूप से चेतन मन से नियंत्रित रहता है। वह अपने चेतन विचारों से ही प्रेरित होकर व्यवहार करता है। अचेतन की कोई प्रेरणाएँ नहीं होती। अतः अचेतन का महत्व नहीं होता।

⊙ Motivational Concept है। अभिप्रेरणात्मक प्रत्यय है।

⇔ परिपक्व तथा भावात्मक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के Motive (प्रेरक) उनके पूर्व अनुभवों से कार्यात्मक रूप से जुड़े नहीं होते हैं। अर्थात किसी भी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति ज्यादा महत्वपूर्ण है, न कि उसकी बीती हुई परिस्थितियाँ।

गरीब व्यक्ति —(कड़ी मेहनत)→ धन कमाने के लिए (लक्ष्य)
↓
धनी आदमी —(कड़ी मेहनत)→ धन कमाने के लिए (लक्ष्य)

परिपक्व व्यक्ति (धनी आदमी) की कुछ अभिप्रेरणाएँ (धन कमाना) गत अनुभूतियों (गरीबी) से कार्यात्मक रूप ~~से~~ में यद्यपि संबंधित नहीं ~~है~~ होती फिर भी सम्भवतः इन्हीं अनुभूतियों (गरीबी) से अभिप्रेरक (धन कमाने की प्रेरणा) उत्पन्न हुए। ~~लेकिन अब स्वतंत्र रूप से रहते हुए~~

आलपोर्ट के अनुसार,

अभिप्रेरणाएँ (धन कमाना) उस व्यक्ति की मौलिक परिस्थिति (गरीबी) से वर्तमान स्थिति में पूर्णतया स्वतंत्र होती है।

पहले लक्ष्य था → धन कमाना (गरीबी मिटाने हेतु)
अब लक्ष्य है → " " (विलासिता हेतु)

⇔ आलपोर्ट का मानना था कि व्यक्तित्व के सिद्धान्त के लिए मुख्य समस्या है कि प्रेरणा के साथ व्यवहार?

(प्रेरणा) → (व्यवहार)
?

प्रेरणा की अवधारणा (चार आवश्यकताएँ)

1. व्यक्ति के प्रेरकों की <u>समकालीन</u> पहचान करना।
2. व्यक्ति को अन्य कई प्रेरकों की अनुभूति कराना।
3. व्यक्ति के <u>भविष्य</u> के मूल्यों, योजनाओं तथा इरादों को जानना।
4. व्यक्ति की अभिप्रेरणा के तरीकों को अद्वितीय (Unique) समझना।

उपरोक्त प्रेरक की अवधारणा से व्यक्ति के व्यवहार को जाना जा सकता है।